अध्याय- द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 सम्बन्धित शोधकार्य का पुनरावलोकन

2.3 उपसंहार

अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य को बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता।

अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढ़ी साहित्य का पुनरावलोकन है। संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिये महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में वस्तुनिष्ठ रूप से अनुसंधान कार्य को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है। किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं। तब तक समस्या का निर्धारण और परिसीमन करने में तथा शोध कार्य की रूपरेखा तैयार करने में कठिनाई आती है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होती है।

साहित्य पुनरावलोकन के साधन :-

साहित्य का पुनः अध्ययन शोध के क्षेत्र से जुड़ने व परिणाम की ओर अग्रसर होने में मदद करता है। साहित्य पुनरावलोकन के अभाव में शोध की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती है। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु व उद्देश्य से विचलित न होने के लिये संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिये कुछ साधन इस प्रकार है।

- जर्नलस्
- पुस्तकें

- दस्तावेज (विभिन्न शैक्षिक दस्तावेज)
- इनसायक्लोपिडिया
- शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट
- शोध सारांश इत्यादि।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध कार्य के लिये पूर्ववर्ती अध्ययन का ज्ञान अत्याधिक महत्वपूर्ण है। अध्ययन के विकास की श्रृंखला उसी से बनती है।

प्रस्तावित शोध से संबंधित साहित्य सामाजिक अध्ययन के भौगोलिक विषयांश संबंधी अध्ययन का सारांश इस अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है तथा साथ ही साहित्य के स्त्रोतों का भी उल्लेख किया गया है।

रूसिया (1980) ने प्राथमिक स्तर के कक्षा चौथी के छात्रों द्वारा भौगोलिक धारणाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है।

उद्देश्य

(1) कक्षा चौथी के छात्रों का भौगोलिक धारणाओं के स्तर को ज्ञात करना। (2) छात्र एवं छात्राओं के भौगोलिक धारणाओं संबंधी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना। (3) ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के छात्रों को भौगोलिक धारणाओं संबंधी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।(4) छात्रों द्वारा भौगोलिक धारणाओं को समझाने में सामान्यतः की जाने वाली गलतियों तथा उनके समझने की सीमाऐं ज्ञात करना। (5)छात्र भौगोलिक धारणाओं को स्पष्ट रूप से समझ सके इस हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष :-

(1) भूगोल के विभिन्न विषयांशों (प्राकृतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक) में विद्यार्थीयों द्वारा प्रतिशतों में कोई अंतर नहीं आया। (2) छात्रों को भूगोल का ज्ञान, अवबोध एवं कौशल समान स्तर पर है। इन चारों में कोई अंतर नहीं है। (3) शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों में प्राकृतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तीन विषयांशों का ज्ञान कम है। यद्यपि ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की अपेक्षा भौगोलिक धारणाओं का ज्ञान कम है। (4) आर्थिक विषयांश शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में अवबोध एवं उपरोक्त में अंकों का वितरण कम है। (5) छात्र एवं छात्राओं की भौगोलिक धारणायें समान है।

पोंक्षे :- (1983)

के द्वारा महाराष्ट्र के माध्यमिक स्कूल के VII, VIII, IX, भूगोल पाठ्यक्रम में पढ़ाये जाने वाले संप्रत्यय, सूचकांको का विश्लेषण किया गया।

निष्कर्ष :-

1. अधिकतर भूगोल पाठ्यक्रम संप्रत्यय पर आधारित नहीं थी।
2. सहायक सामग्री पाठशालाओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थी।
3. ग्रंथालय में पुस्तकों की कमी।
4. फिल्म स्ट्रीप आदि तकनीकी साहित्यों का अभाव।

भट्टाचार्य (1984)

भूगोल शिक्षण के लिये विभिन्न मॉडल्स का प्रभाव उन्होंने निष्कर्ष निकाले कि –

निष्कर्ष :-

(1) पारस्परिक विधि और Concept attainment model से पढ़ाने पर विश्वसनीय अंतर नहीं पाया गया। (2) आगमनात्मक शिक्षण विधि और पारस्परिक तरीके से पढ़ाई गई पद्धतियों में विश्वसनीयता पाई गई। (3) मानव भूगोल की अपेक्षा प्राकृतिक भूगोल में विद्यार्थीयों की रूचि ज्यादा है।

पाटिल (1985)

"सोलापुर जिले के ग्रामीण स्कूल में भूगोल शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।"

निष्कर्ष :-

उन्होंने पाया कि -

1. 50 प्रतिशत स्कूलों में भूगोल शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है।
2. 50 प्रतिशत स्कूलों में भूगोल पढ़ाने की पर्याप्त सुविधाऐं नहीं है।
3. 42 प्रतिशत भूगोल शिक्षकों ने कोई रिफ्रेशर कोर्स नहीं किया है।

गुप्ता (1989)

"भौगोलिक शिक्षण साहित्य का विभिन्न उम्र के बालकों में भौगोलिक संप्रत्यय को समझने की अवधारणा।"

निष्कर्ष :-

(1) कक्षा छटवीं के विद्यार्थीयों को कुल 100 में से औसत 8.84 अंक प्राप्त हुये हैं। जिसमें छात्रों को 10 प्रतिशत प्राप्त हुये जिसकी तुलना में छात्राओं को 8.2 अंक प्राप्त हुये। (2) कक्षा सातवीं के विद्यार्थीयों को कुल 100 में से औसत 10.87 अंक प्राप्त हुये जिसमें छात्राओं का 9.90 प्रतिशत तथा छात्रों को 11.82 प्रतिशत अंक प्राप्त हुये। (3) कक्षा आठवीं के विद्यार्थीयों को कुल 100 में से औसत 8.76 अंक प्राप्त हुये, जिसमें छात्राओं को 11.27 प्रतिशत तथा छात्रों को 17. 26 प्रतिशत अंक प्राप्त हुये।

सक्सेना (1990)

प्राथमिक स्तर के कक्षा चौथी के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास में व्यक्तित्व के तथ्यों तथा अध्यापक की अध्ययन विधियों का अध्ययन किया है।

उद्देश्य

(1) कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल का विकास करना। (2) कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास पर व्यक्तित्व तथ्यों के प्रभाव का अध्ययन करना। (3) कक्षा चार में भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों के मत भौगोलिक विकास में उपयुक्त अध्ययन विधियों के विषय में जानना। (4) कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास व व्यक्तित्व तथ्यों का अध्ययन करना।

खान रफत (1993-94)

कक्षा नववीं में भूगोल विषय में छात्र-छात्राओं की न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारण एवं उनके निदानात्मक उपाय का अध्ययन किया।

उद्देश्य

(1) कक्षा नववीं में भूगोल में छात्र-छात्राओं के न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारणों की जानकारी प्राप्त करना। (2) त्रुटियों के कारणों का पता लगाना एवं उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को दूर करने के उपाय सुझाना इस शोध का मुख्य उद्देश्य था।

दुबे अनीता (2002-03)

हाईस्कूल स्तर पर भूगोल में मानचित्र अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनके निदानात्मक उपाय।

उद्देश्य

(1) छात्रों में भूगोल अध्ययन के प्रति रूचि का अध्ययन करना। (2) भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन में छात्रों को होने वाली कठिनाईयों के विषय में जानकारी प्राप्त करना। (3) प्रश्न पत्रों में मानचित्र संबंधी समस्याओं, प्रश्नों के उचित मानदण्डों का निर्धारण करना तथा वर्तमान प्रश्न पत्रों में इस कौशल के मूल्यांकन की स्थिति ज्ञात करना। (4) मानचित्र उपयोग की सही जानकारी छात्र छात्राओं को प्रदान करना। (5) मानचित्र अध्ययन में होने वाली त्रुटियों के कारणों की सही जानकारी मालूम करना। (6) त्रुटियों को दूर करने हेतु उपाय ढूँढना।

निष्कर्ष

(1) शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व प्रशिक्षण व पाठ्य परीक्षणों में किसी प्रकार का सार्थक अंतर नहीं पाया गया। (2) पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण ग्रामीण एवं शहरी की तुलना ही परीक्षण से करने पर दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

भोजने संभाजी (2004-05)

कक्षा दसवीं के छात्रों को मानचित्र भरण में आने वाली समस्याऐं एवं उपाय योजना।

निष्कर्ष पूर्व परीक्षण

1. छात्रों को रूढ़ चिन्ह एवं गुणाओं के बारे में जानकारी नहीं है।
2. छात्रों को अक्षांश व देशांतर के बारे में जानकारी नहीं है।
3. छात्रों को भारत सीमा तथा घटक राज्यों के बारे में जानकारी नहीं है।

पश्च परीक्षण

(1) रूढ चिन्ह एवं गुणा चार्ट दिखाकर अध्ययन किया तो छात्रों को समझ आया। (2) छात्रों को दिशा समझने में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताने से दिशा समझ सके। (3) मानचित्र भरण के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव देने से यह मानचित्र सही भरण कर सकते हैं। (4) सीमा, विस्तार समझने पर वह सही मानचित्र में दिखाते हैं।

काजल शर्मा (2006-07)

भूगोल विषय में कक्षा नववीं के छात्रों को मानचित्र पठन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन एवं उपाय योजना।

उद्देश्य

1. कक्षा नववी के छात्रों को मानचित्र पठन में आने वाली कठिनाईयों को ज्ञात करना।
2. मानचित्र पठन में होने वाली गलतियों को ज्ञात करना।
3. मानचित्र पठन में होने वाली गलतियों के सुधार हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष

(1) अध्यापन शैक्षिक सामग्री के इस्तेमाल किया तो छात्रों के ज्यादा समय ध्यान में रहता है। (2) कक्षा में मानचित्र का उपयोग करके अध्यापन किया तो छात्र अच्छे तरीके से मानचित्र पढ़ सकते हैं। (3) कक्षा में छात्रों का कृतीयुक्त सहभागी किया तो छात्रों की गलतियां कम होती है। (4) कक्षा में पारम्परिक विधि से अध्यापन करने के बजाय नई तकनीके तथा शैक्षिक सामग्री का उपयोग करके अध्यापन किया तो विद्यार्थीयों में रूचि बढ़ सकती है।

वाक्चौरे सुनिल (2008-2009)

कक्षा नववी के भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणाओं का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

निष्कर्ष

(1) मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा शीर्षक तथा उपशीर्षक संबंधी ज्ञान का उपलब्धि पर प्रभाव हुआ। (2) मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'अक्षांश-देशांतर' संबंधी ज्ञान का उपलब्धि पर प्रभाव हुआ। (3) मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा सूची संबंधी ज्ञान का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं हुआ। (4) भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा संबंधी ज्ञान का उपलब्धि पर प्रभाव हुआ। (5) मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा दिशा संबंधी ज्ञान का उपलब्धि पर प्रभाव हुआ।

2.3 उपसंहार

उपरोक्त अध्ययनों से यह पता चलता है, कि भूगोल विषय में अनेक प्रकार के अध्ययन हुये है, जिसमें भौगोलिक अवधारणाओं का अध्ययन किया गया है। भूगोल में मॉडल्स एवं विभिन्न शैक्षिक सामग्री का प्रयोग करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। परम्परागत विधि एवं मल्टीमिडिया का प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में क्या अंतर आता है, इसका भी अध्ययन किया गया है। इन शोध अध्ययनों में ग्रामीण क्षेत्र क्षेत्र में भूगोल शिक्षा में आने वाली कठिनाईयों का भी अध्ययन किया गया है। भूगोल में न्यून उपलब्धि के कारण एवं निदानात्मक उपाय। विभिन्न उम्र के बालकों का भौगोलिक अवधारणाओं का ज्ञान भी देखा गया है। मानचित्र पठन में विद्यार्थियों को आने वाली कठिनाईयों का भी अध्ययन किया गया है। मानचित्र अध्ययन

की कठिन अवधारणाओं का अध्ययन किया गया है। मानचित्र भरण में आने वाली समस्याएँ तथा इन समस्याओं का निराकरण करने के उपाय भी दिये गये हैं।

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक कौशल विकास में व्यक्तित्व के तथ्यों तथा अध्यापक की अध्यापन विधियों का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि, व्यक्तित्व तथ्यों का विकास होने पर विद्यार्थियों का भौगोलिक कौशल भी विकसित होते है।

उपरोक्त अध्ययनों में छात्र, छात्राए, ग्रामीण शहरी विद्यार्थियों के ज्ञान, अवबोध कौशल में कोई अंतर नहीं पाया गया। परंपरागत और मल्टीमिडिया विधि के प्रयोग में सार्थक अन्तर पाया गया है। मल्टीमीडिया का प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर आता है। इन अध्ययनों में और प्रस्तुत अध्ययन में यह अन्तर है कि, उपरोक्त सभी अध्ययनों में भौगोलिक अवधारणाओं का ज्ञान या शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में भौगोलिक अवधारणाओं का व्यावहारिक ज्ञान देखा गया है, जिसका सम्बन्ध बुद्धी, शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्तर, छात्र, छात्राएँ, ग्रामीण, शहरी, शासकीय अशासकीय इत्यादि चरों के साथ देखा गया है।